लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

अशोक लौट के आता तो

✍ राजीव तिवारी

रणभूमि में
हताहत लोगों को देखकर
फिर किसी राजा का
मन द्रवित नहीं होता
उसके हृदय में
अंतर्निहित ऋषितत्व
प्रबल नहीं होता
अपितु, रक्त पिपासा और जगती है

न किसी उपगुप्त के पास
कोई सम्राट जाता है
न किसी बुद्ध तक पहुंचता है

अशोक लौट के आता तो
युद्ध भूमि से लौटकर
कोई सम्राट
फिर
युद्ध भूमि में नहीं जाता

किसी बगदाद किसी काबुल
किसी दमिश्क किसी कीव
के रिहायशी इलाकों में

बेगुनाह शहरियों के ऊपर
बम नहीं बरसते
मिसाईल नहीं दगते

सीमा विस्तार की
शासकों की हिंसक भूख
इंसानी जान के महत्व के आगे
हार जाती

युद्ध की निरर्थकता को
हिंसा के परिणाम को
शांति के महत्व को
प्रेम की अपरिहार्यता को
अशोक से गहरे
कोई सम्राट नहीं समझ पाया आजतक
क्योंकि उसने
अनुभवों से सीखते हुए समझा
इसलिए सत्य तक पहुंचा।